श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का वास्तविक रहस्य

हमारे देश में मनाये जाने वाले पर्व, जयन्तियां तथा समारोह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में किसी न किसी रूप में आध्यात्मिक सत्ता से जोड़ते है शायद यही कारण है कि आज भाग्यविधाता कहे जाने वाले विज्ञान के युग में भी श्रीकृष्ण की महिमा विविध रूपों में आज भी स्वीकार्य है। इस विज्ञान के युग में, शास्त्रो में वर्णित धर्म ग्लानि की बात भी ज्यादा अति हो चुकी है। आज इतने सारे धर्मो, शास्त्रों गुरूओं, भक्त इत्यादि के होते हुए मानव समाज का पतन हो चुका है और अब वह विनाश की ओर तीव्रगति से बढ़ रहा है। यही गीता के भगवान के अवतरण का समय है। जिस श्रीकृष्ण की इतनी महिमा है कि उनको आज एक राजनीतिक नेता, एक अजेय योद्धा, एक उच्च धार्मिक योगारूढ़ महापुरूष, एक कुशल राजदूत, एक प्रतिभाशाली रथवाहक, एक मनमोहक बालक, एक सहायक मित्र, एक निपुण मुरलीवादक के रूप में याद करते है। वे मुख्यत: इन्ही रूपों में उसका गायन करते हैं। परन्तु प्राचीन अथवा अर्वाचीन ग्रन्थों में इन पहलुओं में श्रीकृष्ण की महानता को स्पष्ट करने के लिए जिन वृत्तान्तों का उल्लेख है वे प्राय: उसकी महानता के साधक नहीं बल्कि बाधक है। उदाहरण तौर पर श्री कृष्ण के बाल्यावस्था में मक्खन चुराने सम्बन्धी जिन वृतान्तों का उल्लेख है, वे उन्हें 'मोहन या 'मनमोहन' चित्रित करने के साथ-साथ उनमें चंचलता, अनुशासनहीनता, इन्द्रिय-निग्रह का अभाव, स्तेय वृत्ति (चोरी) का अस्तित्व भी प्रदर्शित करते हैं। द्वापर और कलियुग में मनभावने और लुभावने बच्चों का यह प्राकृत स्वभाव होता है-इसलिए उस काल में कवियों ने अपनी कृतियों में श्री कृष्ण के भी ऐसे ही स्वभाव को उभारा है। वे सोचते होंगे कि वह बच्चा ही क्या जो नटखट, हठी और चंचल न हो। लगता है कि वे भूल गए होंगे श्रीकृष्ण अपने हर आयु-भाग में विलक्षण थे। वे मनमोहक इसलिए थे कि नैन उनके रूप के देखकर सुख पाते थे, जैसे सारा सौन्दर्य उनके ही रूप-लावण्य में मुग्ध हो गया हो, ऐसी उनकी न्यारी छवि थी। इसलिए उनका नाम ही हो गया- 'सुन्दर'। निस्सन्देह उनमें बाल्यकाल की सरलता रही होगी, खेल कूद भी उनको प्रिय होगा, वे लुकने छिपने का खेल भी खेलते होंगे, आंख मिचौनी भी करते होंगे, उनकी हंसी, उनका हाव-भाव और उनका हर क्रिया कलाप मनमोहक रहा होगा। परन्तु उसमें दिव्यता अवश्य रही होगी और जिन नियमों का योगी अभ्यास करते हैं, वे उन्हें जन्म ही से मिले होंगे।

इसी प्रकार हम देखते है कि अनेक ग्रन्थों में अर्जुन के साथ जो (सखा भाव) दर्शाया जाता है, उसका उल्लेख करते-करते अतीत काल के लेखकों ने उन्हें अर्जुन के साथ जाम लेते हुए भी दिखाया है और द्रौपदी के होते हुए भी अपनी बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करने को उद्यत दर्शाया है और इतना ही नहीं, द्वारका में जाकर एक सन्यासी वेश धारण कर, मन्दिर में जाती हुई सुभद्रा को अपहरण करने तथा उसकी रक्षा करने वालों को मार डालने तक की सलाह देने का भी उल्लेख किया है। वास्तव में श्रीकृष्ण के बारे में ऐसा सोचना भी महापाप है। क्योंकि उनके उज्ज्वल चरित्र के कारण तो उन्हें '16 कला सम्पूर्ण और पुरूषोत्तम' तथा भगवान की उपाधि दी जाती है।

भारतवासी जानते है कि ग्रन्थकारों ने श्री कृष्ण की वाद्य-विद्या अथवा बांसुरी-वादन की कला का तथा उसके रूप लावण्य का ऐसा उल्लेख किया है कि उन्होंने यह बताने में भी संकोच नहीं किया कि उनकी मुरली की तान सुनकर गोप पत्नियां और यज्ञ-पत्नियां घर-द्वार छोड़कर उनके साथ रास करती थीं। और

उनके साथ उनका स्वच्छन्द व्यवहार हुआ, और कि श्रीकृष्ण 16,108 रानियां थीं, जिनसे डेढ़ लाख से अधिक बच्चे पैदा हुए। सोचिए तो ऐसा भला श्री कृष्ण पर दोषारोपण करना क्या अपने ही दोषों के लिए छुटटी पाने का यत्न करना नहीं है? उन्हें मुरली मनोहर तथा भगवान सिद्ध करते-करते उनमें स्त्रैण-भाव नारी-अपहरण की चेष्ट, कुमारियों के चीर हरण का ऊल-जलूल उल्लेख लेखक के अपने मन की उच्छृंखलता ही तो है। श्रीकृष्ण में जिस सोलह कला की बात कही गयी है, इन्ही मूल्यों का जब समावेश होता है तब मनुष्य पुरुषोत्तम बनता है। शास्त्रों में श्रीकृष्ण की चतुराई का ऐसा प्रदर्शन किया गया है कि उसे अनैतिकता का रूप दे दिया गया है। उन्हें एक ओर भगवान कहा गया है और दूसरी ओर हजार रानियां रखते हुए, माखन चोर बताया गया है।

स्पष्ट है कि आज के परिप्रेक्ष्य में श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन गाथा को यथार्थ जानकर मनायें। वास्तव में तो श्रीकृष्ण अपने पूर्व जन्म में मनोविकारों के विरूद्ध युद्ध कला में सबसे अधिक दक्ष थे। वे अपने शरीर रूपी रथ के कर्मेन्द्रियों रूपी घोड़ों के संचालन की दृष्टि से कुशल रथवान थे। वे विश्व शान्ति के सफल दूत थे, योगीराज थे और बाल सुलभ सरलता की मूर्ति थे तथा ज्ञान मुरली वादन में निपुण आत्मा रूपी गोपी को अतीन्द्रिय सुख देने वाले थे। उनके माथे पर मोर मुकुट का अर्थ सम्पूर्ण पवित्रता से है जिनके मन, वचन, कर्म में पवित्रता की रस समायी है। हाथ में स्वदर्शन चक्र अर्थात 'स्व' माना आत्मा के जन्म मरण के चक्र को जानना आदि। 16, 108 रानियां बनाने का अर्थ यही है कि जो योगीराज के रूप में श्री कृष्ण ने योग सिखाया उससे 16,108 आत्माओं ने अपने आत्मा के असली स्वरूप को जान इस भौतिक शरीर में व्याप्त बुराईयों पर विजय पाने का पुरूषार्थ किया और वे देवी देवता योग्य बने। काठ मुरली अर्थात ज्ञान की मधुर आवाज जो कि श्रीकृष्ण के लिए चरितार्थ है कि उनके मुख से सदैव ज्ञान ही निकलते थे। जिससे गोप और सखायें इकटठा होकर सुनने लगते थे। आदि....आदि।

आज के समय में आवश्यक हो गया है कि श्रीकृष्ण के इस अलौकिक रहस्यों को जान जन्माष्टमी मनाये और श्रीकृष्ण जैसे बनकर इस संसार से आसुरी वृत्ति, सम्राज्य समाप्त करके दैवी सृष्टि की स्थापना करें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com